



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 12 अंक 9

www.csir.res.in

सितम्बर 2024

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने ग्लोबल बायो इंडिया 2024 के चौथे संस्करण का उद्घाटन किया

हाल ही में प्रगति मैदान, नई दिल्ली में ग्लोबल बायो इंडिया 2024 के चौथे संस्करण का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा किया गया। ग्लोबल बायो इंडिया सम्मेलन के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय राज्य मंत्री, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने डीबीटी और बाइरैक को अभूतपूर्व विकास के लिए बधाई दी और कहा कि भारत की जैव अर्थव्यवस्था

ने उल्लेखनीय विकास को हासिल किया है। उन्होंने कहा कि यह 2014 में 10 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2024 में 130

बिलियन डॉलर से अधिक हो गई है, और इसके 2030 तक 300 बिलियन डॉलर



तक पहुंचने का अनुमान है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत एक

वैश्विक जैव प्रौद्योगिकी शक्ति के रूप में उभर रहा है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को दुनिया भर में नए जैव प्रौद्योगिकी बूम के चैंपियन के रूप में सराहा जाएगा, जो अर्थव्यवस्था, नवाचार, रोजगार और पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं को बढ़ावा देने का भरोसा देता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने जैव प्रौद्योगिकी विभाग और बाइरैक द्वारा प्रकाशित 'इंडिया बायो



इकोनॉमी रिपोर्ट 2024' पर प्रकाश डाला, जिसमें भारतीय जैव प्रौद्योगिकी उद्योग द्वारा की गई अभूतपूर्व प्रगति को दर्शाया गया है। उन्होंने ग्लोबल बायो-इंडिया के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, कहा कि जीबीआई विभिन्न प्रतिभागियों, जिसमें केंद्रीय और राज्य मंत्रालय, स्टार्टअप्स, एसएमई, बड़े उद्योग, बायोक्लस्टर, अनुसंधान संस्थान, निवेशक, इनक्यूबेटर, नियामक, नीति निर्माता, व्यापार विश्लेषक, विधि विशेषज्ञ, आईपी, सीआरओ, अन्य देशों के नवाचार मिशन, अंतर्राष्ट्रीय निकाय, उद्योग संघ शामिल हैं, के लिए एक अनूठा व्यावसायिक नेटवर्किंग मंच प्रदान करता है।

उन्होंने इससे पूर्व ग्लोबल बायो-इंडिया के तीन संस्करणों को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए डीबीटी-बीआईआरएसी की सराहना की। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र के लिए पहला स्टार्टअप एक्सपो जून 2022 में आयोजित किया गया था, जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया था।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने ग्लोबल बायो-इंडिया

2024 को 2023 की तुलना में एक ज्यादा बड़ा आयोजन बताया, जिसमें 30 से अधिक देशों, 500 से अधिक प्रदर्शक, 5000 से अधिक प्रतिनिधि, 1000 से अधिक स्टार्टअप्स, बी2बी, बी2जी, जी2जी बैठकें और बहुत कुछ शामिल हैं। इस अवसर पर डॉ. सिंह ने कहा कि भारत में निवेश करने के बहुत से कारण हैं, उनमें से एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि भारत वैश्विक वैक्सीन उत्पादन में 60 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है, इसका अमेरिका के बाहर यूएसएफडीए द्वारा अनुमोदित निर्माण संयंत्रों की संख्या के मामले में दूसरा सबसे बड़ा होना है। यहां बायो-फार्मा, बायो-एग्री, बायो-इंडस्ट्रियल, बायो-एनर्जी, बायो-सर्विसेज और मेड-टेक में निवेश के अवसर उपलब्ध हैं।

यह रेखांकित करते हुए कि भारत में 'बायो-क्रांति' पश्चिमी दुनिया द्वारा संचालित आईटी क्रांति के समान है, डॉ. सिंह ने स्पष्ट रूप से प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा हाल ही में अनुमोदित बायो ई3 (अर्थव्यवस्था, रोजगार और पर्यावरण के लिए जैव प्रौद्योगिकी) नीति का उल्लेख किया।

उन्होंने बायो ई3 नीति के बारे में जानकारी साझा करते हुए, इस नीति को वैश्विक जलवायु परिवर्तन की पृष्ठभूमि में हमारे देश के लिए इस महत्वपूर्ण समय पर उपयुक्त कदम बताया, जो एक स्वच्छ, हरे-भरे और समृद्ध भारत के निर्माण को सक्षम करेगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि नई नीति हमारे पर्यावरण की रक्षा करते हुए वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

उन्होंने जैव-आधारित रसायन और एंजाइम, स्मार्ट प्रोटीन, सटीक जैव चिकित्सा, जलवायु-अनुकूल कृषि, कार्बन कैप्चर और उपयोग तथा उन्नत समुद्री एवं अंतरिक्ष अनुसंधान जैसे प्रमुख फोकस क्षेत्रों को रेखांकित किया और इन्हें जैव प्रौद्योगिकी का भविष्य बताया और कहा कि ये विभिन्न उद्योगों में विकास और नवाचार को प्रेरित करेंगे।

बायो ई3 नीति अत्याधुनिक जैव निर्माण सुविधाओं, जैव फाउंड्री क्लस्टर और बायो-एआई हब स्थापित करके इस परिवर्तन का सहयोग करेगी। जैव प्रौद्योगिकी केंद्र

अनुसंधान और वाणिज्यिक निर्माण के बीच की खाई को पाटेंगे, स्टार्टअप्स, एसएमई और अच्छी तरह से स्थापित कंपनियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देंगे, जिससे उच्च प्रदर्शन जैव निर्माण और जैव अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा। मंत्री महोदय ने कहा कि बड़े पैमाने पर जैविक डेटा का विश्लेषण करने के लिए एआई के एकीकरण से जीन थेरेपी, खाद्य प्रसंस्करण में प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्होंने रोजगार के अवसरों पर जोर देते हुए, खासकर टियर-II और टियर-III शहरों में जैव निर्माण केंद्र स्थानीय संसाधनों का उपयोग करेंगे और क्षेत्रीय आर्थिक विकास में योगदान देंगे, जिससे अधिक समावेशी विकास को बढ़ावा मिलेगा। डॉ. सिंह ने इस अवसर पर मानक बढ़ाने, बाधाओं को खत्म करने और नई ऊंचाइयों तक पहुंचने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमने जो गति प्राप्त की है और हमारे पास जिन उत्कृष्ट प्रतिभाओं का संगम है, उसके चलते भारत@2047 जैव प्रौद्योगिकी के मामले में अग्रणी राष्ट्र होगा।

इस अवसर पर बायोटेक्नोलॉजी इंडस्ट्री रिसर्चअसिस्टेंस काउंसिल (बीआईआरएसी) ने जैव प्रौद्योगिकी के 9 प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ आशय पत्रों पर हस्ताक्षर किए, जिनके नाम निम्नानुसार हैं: -

1. यूनाइटेड स्टेट्स फार्माकोपियल कन्वेंशन (यूएसपी)
2. यूके रिसर्च एंड इनोवेशन (यूकेआरआई), यूके
3. डीएचआर होल्डिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दानाहर)
4. मॉरीशस इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी लिमिटेड (एमआईबीएल)
5. ला ट्रॉब यूनिवर्सिटी
6. ब्लॉकचेन फॉर इम्पैक्ट (बीएफआई)
7. यूएस-इंडिया स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप



फोरम (यूएसआईएसपीएफ)

8. आईबायोएम (इंडियन बायोटेक एमएसएमई एंड स्टार्टअप फाउंडेशन)

9. भारत स्टार्टअप एंड इनोवेशन सोसाइटी (बीएसआईएस)-भारत स्टार्टअप फेस्टिवल इस अवसर पर ग्लोबल बायो इंडिया 2024 में 'इंडिया बायो इकोनॉमी रिपोर्ट 2024' का अनावरण भी किया गया, साथ ही बीआईआरएसी कॉम्पेंडियम ऑफ प्रोडक्ट्स एंड टेक्नोलॉजीज 2024 भी लॉन्च किया गया। इसके अलावा, इस आयोजन में जीबीआई प्रदर्शक डायरेक्ट्री को भी लॉन्च किया गया, जिसमें बीआईआरएसी इक्विटी फंड और अमृत ग्रैंड चैलेंज जनकेयर इनोवेशन्स रिपोर्ट के संबंध में गहन जानकारी शामिल है। ग्लोबल बायो इंडिया ने 30 अभिनव स्टार्टअप्स का शुभारंभ किया है, जो जैव प्रौद्योगिकी के भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

इस सम्मेलन में डॉ. किरण मजूमदार शॉ, बायोकॉन लिमिटेड की कार्यकारी अध्यक्ष ने भारत के फार्मास्यूटिकल क्षेत्र के बाजार में हिस्सेदारी और आकार को बढ़ाने के लिए अधिक सहयोग एवं भागीदारी का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी भविष्य की अर्थव्यवस्था में बौद्धिक संपदा और स्थायी

विकास में नवाचार, निवेश का लाभ उठाते हुए, आर्थिक विकास को आगे ले जाएगा।

प्लैनेटरी हेल्थ बायोसॉल्यूशंस, नोवोनेसिस, की कार्यकारी उपाध्यक्ष, डॉ. टीना सेजर्सगार्ड फैनो ने बायो ई3 नीति के लिए भारत को धन्यवाद दिया और कहा कि हमें अर्थव्यवस्था के साथ-साथ पर्यावरण के लिए भी समाधान की तलाश करनी चाहिए।

सम्मेलन में भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार, प्रो. अजय कुमार सूद ने 'ऑस्ट्रेलियाई सामरिक प्रशांत संस्थान एसपीआई' की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि रिपोर्ट के अनुसार, भारत 64 तकनीकों में से 45 में शीर्ष देशों में है और जैव प्रौद्योगिकी निर्माण में दूसरे स्थान पर है।

डॉ. राजेश एस. गोखले, जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव, बीआईआरएसी के अध्यक्ष और डीजी-आईबीआरआईसी ने इस तरह के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।

सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, ने इसे नवाचार और अनुसंधान का दशक बताया। इस सम्मेलन में एसोसिएशन ऑफ बायोटेक लेड एंटरप्राइजेज के अध्यक्ष, श्री जी. एस. कृष्णन; बीआईआरएसी के प्रबंध निदेशक डॉ. जितेंद्र कुमार भी उपस्थित हुए।

सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. मनीष मोहन गोरे ने बीएचयू में दिया व्याख्यान



काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू), वाराणसी के हिंदी प्रकाशन समिति की ओर से 6 सितम्बर 2024 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं निति अनुसन्धान संस्थान (निस्पर) के वैज्ञानिक और विज्ञान प्रगति पत्रिका के संपादक डॉ. मनीष मोहन गोरे को आमंत्रित किया गया था। डॉ. मनीष ने 'हिंदी में विज्ञान लेखन की बारीकियाँ' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस कार्यशाला में विज्ञान स्नातक और परास्नातक कक्षाओं के लगभग 65 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की।

अपने व्याख्यान के आरम्भ में डॉ. मनीष ने प्रतिभागियों से पूछा कि जब आप मतदान करने जाते हैं तो हाथ की तर्जनी ऊँगली पर लगाई जाने वाली अमिट स्याही के बारे में

क्या आपने सोचा है कि यह कहाँ बनी है। दरअसल यह अमिट स्याही वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान परिषद् (सीएसआईआर) की राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (दिल्ली) में बनी है।

यह कार्यशाला बीएचयू के जंतु विज्ञान विभाग के एसपी रॉय चौधरी सभागार में आयोजित की गई जिसमें प्रस्तुत अपने व्याख्यान में सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. मनीष मोहन गोरे ने कहा कि आमतौर पर विज्ञान का दो रूपों में अभ्यास किया जाता है – पहला अनुसन्धान और दूसरा शिक्षण। लेकिन इन दो विधियों से विज्ञान जन-जन तक नहीं पहुँचता। आमजन तक विज्ञान को ले जाने में विज्ञान के अभ्यास की तीसरी प्रक्रिया अपनाई जाती है जिसे विज्ञान संचार या विज्ञान लोकप्रियकरण कहते हैं। विज्ञान संचार के अंतर्गत वैज्ञानिक जानकारी सरल सहज

भाषा शैली में आमजन जीवन के उदाहरण के साथ आमजन को साझा की जाती हैं ताकि उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो सके। आमजन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हमारे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 A(h) के अंतर्गत सभी नागरिकों का एक मौलिक कर्तव्य है। साथ ही विज्ञान संचार में जनसंचार माध्यमों (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया) की अहम भूमिका होती है।

इस अवसर पर विज्ञान संकाय की छात्र समन्वयक प्रोफेसर मधु तापड़िया ने विद्यार्थियों को बताया कि यह कार्यशाला उनको अपने अन्दर के हुनर को पहचानने के लिए आयोजित की गयी है। इस कार्यशाला का संयोजन जंतु विज्ञान विभाग के प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे और डॉ. ऋचा आर्य ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. चंद्रशेखर पति त्रिपाठी ने किया।

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने उन्नत सामग्री अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित किया

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने 04 से 06 सितंबर 2024 तक मुंबई में आयोजित उन्नत सामग्री अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी और सिनर्जिक हीट ट्रीट (एचटीएस) पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अपना मुख्य भाषण दिया। इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन एएसएम इंटरनेशनल, इंडिया चैप्टर द्वारा किया गया, जिसमें अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों, उत्पादों और सेवाओं को प्रदर्शित करने के लिए 300 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागी एकत्रित हुए। एएसएम इंटरनेशनल, 108 वर्षीय एक प्राचीन सोसाइटी है जिसका मुख्यालय ओहियो, अमेरिका में है और यह अपनी स्थापना के बाद से सामग्री विज्ञान एवं अभियांत्रिकी समुदाय की सेवा के लिए समर्पित है। 1979 में स्थापित इंडिया चैप्टर को पूरी दुनिया में सबसे सक्रिय चैप्टर में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है।

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पीएमओ, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष विभाग के राज्य मंत्री और कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने अपने बीज वक्तव्य में उभरती प्रौद्योगिकियों में उन्नत सामग्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उन्होंने कहा कि उन्नत सामग्री अपनी मौलिक विशेषताओं और विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्नत विशिष्ट निर्माण के कारण विविध समाधान एवं अवसर प्रदान करती है। उन्होंने ऊर्जा,



स्वास्थ्य देखभाल, अंतरिक्ष, कृषि और रक्षा जैसे महत्वपूर्ण उद्योग क्षेत्रों के लिए गेम-चेंजिंग मूल्यवर्धन के रूप में नैनोस्ट्रक्चर्ड पेरोवस्काइट्स से लेकर मैक्रो-स्केल पॉलिमर तक अभिनव, सतत सामग्रियों के विकास पर प्रकाश डाला।

माननीय केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने उन्नत सामग्री अनुसंधान में कम्यूटेशनल मॉडलिंग, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को एकीकृत करने के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. सिंह ने कहा कि इनसे नवीन गुणों के साथ उपयुक्त सामग्री की खोज में तेजी आने की संभावना है जो पहले प्राप्त करना मुश्किल था। उन्होंने उल्लेख किया कि यह एकीकरण ऐसी सामग्रियों पर आधारित प्रौद्योगिकी विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रोत्साहित करेगा।

उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान समय में देश में उच्च प्रदर्शन वाली सामग्रियों की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जा रही है। उन्होंने इस मांग का श्रेय विश्व में अनुसंधान एवं विकास प्रयासों और व्यावसायीकरण को दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि एक बार जब ये उन्नत सामग्रियां बाजार के लिए तैयार हो होंगी तो वे अक्षय ऊर्जा, मोटर वाहन, एयरोस्पेस, स्वास्थ्य देखभाल, कृषि, और अन्य उद्योगों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगी। डॉ. सिंह ने ऊर्जा क्षेत्र में स्वच्छ ऊर्जा की बढ़ती मांग का उल्लेख किया, जिससे ऊर्जा भंडारण, पवन और सौर ऊर्जा उत्पादन में क्षमता विस्तार हुआ है। डॉ. सिंह ने उन्नत सामग्री पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की

पहल पर भी प्रकाश डाला, जिसका उद्देश्य जलवायु संकट, पर्यावरणीय गिरावट, कृषि, परिवहन, निर्माण एवं पैकेजिंग में अस्थिर प्रथाओं जैसी महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए नवीन सामग्री और प्रौद्योगिकियों को विकसित करना है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना में प्रधानमंत्री मोदी के समर्थन और संरक्षण को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि एनआरएफ भारतीय अनुसंधान उद्यम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि यह पारदर्शी रूप से एकीकृत तरीके से सभी विषयों में संस्थानों में अनुसंधान की

शुरुआत, वित्त-पोषण और समन्वयण का कार्य करेगा। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एक विशेष जनादेश के साथ अनुसंधान एनआरएफ से भारतीय अनुसंधान एवं विकास पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव आने की उम्मीद है, जिससे यह ज्यादा जीवंत, सक्षम और उत्पादक बनेगा।

इस अवसर पर डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि कि केंद्रीय वित्त मंत्री ने वित्त वर्ष 2024-25 के बजट में निजी क्षेत्र को उत्कृष्ट प्रौद्योगिकियों के अन्वेषण और सनराइज डोमेन में अनुसंधान एवं नवाचार को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा देने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए 1

लाख करोड़ रुपये की वित्त पोषण पहल का अनावरण किया था। इसके अंतर्गत 50 वर्षीय ब्याज-मुक्त ऋण के साथ स्थापित प्रस्तावित कोष, व्यावसायिक स्तर पर निजी क्षेत्र-संचालित अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कम या शून्य ब्याज दरों पर दीर्घकालिक वित्तपोषण प्रदान करेगा।

डॉ. सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत कर रहे हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा कल्पना किए गए विकसित भारत के लक्ष्यों को प्राप्त करने में इन अभियानों को महत्वपूर्ण बताया।

सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई को वर्ष 2023-24 का राष्ट्रीय 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' प्राप्त हुआ

सीएसआईआर-केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान(सीएसएमसीआरआई), भावनगर, गुजरात को वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट/सोसाइटी की श्रेणी के अंतर्गत 'ख' क्षेत्र में राजभाषा कीर्ति का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार 14 सितंबर, 2024 को हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानन्द राय, माननीय उपसभापति राज्यसभा एवं अन्य गणमान्य विभूतियों की गरिमामई उपस्थिति में नई दिल्ली में प्रदान किया गया। भारत मंडपम, नई दिल्ली में 14-15 सितंबर, 2024 के दौरान हिन्दी दिवस समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का राजभाषा विभाग द्वारा आयोजन किया गया था। सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई, भावनगर को यह राष्ट्रीय पुरस्कार पिछले पाँच वर्षों में चौथी बार प्राप्त हुआ है। सीएसएमसीआरआई,



भावनगर सीएसआईआर की एक विशिष्ट प्रयोगशाला है जिसमें मानव जाति के कल्याण हेतु विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक शोधरत हैं। नई दिल्ली में इस पुरस्कार को ग्रहण करने के बाद संस्थान के निदेशक डॉ. कन्नन श्रीनिवासन ने कहा कि यह सम्मान संस्थान के सभी कार्मिकों के राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम एवं समर्पण से ही संभव हुआ है। सीएसएमसीआरआई के राजभाषा

अनुभाग को बधाई देते हुए उन्होंने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया। इस दौरान डॉ. पी.एस. सुब्रमण्यम, मुख्य वैज्ञानिक, डॉ. प्रमोद शिंदे, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ कान्ति भूषण पाण्डेय, प्रधान वैज्ञानिक, श्री सुभाष चन्द्र अंतिल, प्रशासन नियंत्रक एवं श्री नीरज कुमार शॉ, क. हिन्दी अनुवादक उपस्थित रहे।

सीएसआईआर-एनजीआरआई और जीएसआई के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर



सीएसआईआर-राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनजीआरआई) और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) ने 2024-26 के लिए केरल और तमिलनाडु क्षेत्र के कुछ हिस्सों में भू-गुरुत्वाकर्षण और चुंबकीय अध्ययन करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओए) पर हस्ताक्षर किए हैं।

यह हस्ताक्षर समारोह 5 सितंबर, 2024 को सम्पन्न हुआ, जो भारत में भूभौतिकीय अनुसंधान और अन्वेषण को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस सहयोग का उद्देश्य खनिज अन्वेषण को बढ़ावा देने के लिए उच्च गुणवत्ता और संकल्प के नए भूभौतिकीय डेटाबेस के निर्माण द्वारा दक्षिणी क्षेत्र की भूवैज्ञानिक समझ को मजबूत करना है।

इस समझौता ज्ञापन के अंतर्गत सीएसआईआर-एनजीआरआई भूभौतिकीय

अनुसंधान में अपनी विशेषज्ञता का लाभ उठाएगा और डाटा संग्रहण और उनकी व्याख्या के लिए व्यापक अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा। इस परियोजना के परिणामों के अंतर्गत इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधन अन्वेषण, टेक्टोनिक अध्ययन और बेहतर भूवैज्ञानिक मानचित्रण सहित अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला के सम्मिलित होने की उम्मीद है।

सीएसआईआर-एनजीआरआई के निदेशक डॉ. प्रकाश कुमार और डॉ. सिंटाई मैनिक सिम, जीएसआई दक्षिणी क्षेत्र के उप महानिदेशक (भूभौतिकी) ने दोनों संगठनों के वरिष्ठ अधिकारियों और प्रमुख हितधारकों की उपस्थिति में समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

यह समझौता ज्ञापन दोनों प्रमुख संस्थानों के बीच दीर्घकालिक साझेदारी के लिए एक मंच तैयार करेगा जो यह सुनिश्चित करेगा कि भारत भूवैज्ञानिक और भूभौतिकीय अनुसंधान

में सबसे आगे रहे। यह परियोजना आधिकारिक तौर पर सितंबर 2024 से शुरू होगी और वैज्ञानिक प्रगति और राष्ट्रीय विकास दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

सीएसआईआर - राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनजीआरआई) भूभौतिकी में विशेषज्ञता वाला एक प्रमुख अनुसंधान संगठन है, जिसका मुख्य फोकस पृथ्वी की गतिशील प्रक्रियाओं को समझने और प्राकृतिक संसाधनों की खोज पर केंद्रित है।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) भारत की एक वैज्ञानिक अभिकरण है जो भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण और उससे जुड़े महत्वपूर्ण अध्ययन कार्यों में संलग्न है, यह संगठन प्राकृतिक संसाधनों की खोज और पहचान करने तथा देश के समग्र आर्थिक विकास में योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा सीएसआईआर-सीएफटीआरआई में प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी एवं नेटवर्किंग पर दो दिवसीय सम्मलेन का आयोजन

सीएसआईआर- राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) ने सीएसआईआर-केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (सीएफटीआरआई), उन्नत भारत अभियान (यूबीए) और विज्ञान भारती (विभा) के सहयोग से 19-20 सितंबर 2024 को मैसूर के केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान में संयुक्त रूप से एक दो दिवसीय "सीएफटीआरआई खाद्य और मोटा अनाज से संबंधित प्रौद्योगिकियों की प्रदर्शनी और नेटवर्किंग बैठक" का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में ग्रामीण आजीविका के सृजन के उद्देश्य से सीएसआईआर-सीएफटीआरआई की नवीन खाद्य प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया। खाद्य विज्ञान अनुसंधान में अग्रणी अनुसंधान संस्थान के रूप में, सीएसआईआर-सीएफटीआरआई खाद्य प्रसंस्करण, कटाई के बाद की तकनीक, खाद्य सुरक्षा और पौष्टिक-औषधीय उत्पादों पर ध्यान केंद्रित करता है। सीएसआईआर-सीएफटीआरआई की खाद्य प्रौद्योगिकी प्रगति में अनाज, दालें, फल, सब्जियां, डेयरी, मांस और मछली सहित खाद्य उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

इस बैठक के आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य देश के ग्रामीण क्षेत्रों के हितधारकों के लाभ के लिए सीएसआईआर-सीएफटीआरआई द्वारा विकसित खाद्य प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करना, ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अवसर पैदा करना, संधारणीय विकास को बढ़ावा देने के लिए



इनके उपयोग को प्रदर्शित करना, खाद्य प्रसंस्करण और कृषि उत्पादकता में प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास और खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देने की रणनीतियां बनाना था। इस आयोजन का उद्देश्य एक ऐसा मंच प्रदान करना था, जहां खाद्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचारों को देश भर के विभिन्न हितधारकों, उद्योग पेशेवरों, उद्यमियों, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और ग्रामीण समुदायों के सदस्यों के लिए प्रदर्शित किया जा सके ताकि वह सहयोग प्राप्त करने, प्रौद्योगिकी अपनाने, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और व्यावसायीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में सीएसआईआर-सीएफटीआरआई प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग के लिए विचारों का आदान-प्रदान कर सके, तथा जिससे खाद्य उद्योग को लाभ प्रदान करने के साथ संधारणीय विकास को बढ़ावा मिले। इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में सीएसआईआर-

सीएफटीआरआई की निदेशक डॉ. श्रीदेवी अन्नपूर्णा सिंह, सीएसआईआर निस्पर की निदेशक रंजना अग्रवाल, शेवरन लैबोरेटरीज प्राइवेट लिमिटेड, मैसूर के प्रबंध निदेशक सैम चेरियन, उन्नत भारत अभियान (यूबीए) के राष्ट्रीय समन्वयक प्रोफेसर वीरेंद्र कुमार विजय और परियोजना निदेशक डॉ. पी. के. सिंह, विभा वाणी के कार्यकारी निदेशक श्री एन.पी. राजीव और सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. योगेश सुमन उपस्थित थे।

इस सम्मेलन में देश भर से 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर-सीएफटीआरआई की निदेशक डॉ. श्रीदेवी अन्नपूर्णा सिंह के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि अपने शुरुआती वर्षों में सीएसआईआर-सीएफटीआरआई ने देश में सूक्ष्म कुपोषण के साथ-साथ कुपोषण की



चुनौती का समाधान करने का प्रयास किया। उन्होंने भैंस के दूध से शिशु आहार, चावल को हल्का उबालने की तकनीक, मसाला और तेल की तकनीक, पारंपरिक भोजन की स्वचालन तकनीक के लिए डोसा मशीन, इडली मशीन, वड़ा मशीन, चपाती मशीन, जैव निम्नीकरणीय के लिए लीफ कप मशीन जैसी सीएसआईआर-सीएफटीआरआई की महत्वपूर्ण तकनीकों का वर्णन करते हुए पौष्टिक-औषधीय उत्पादों के अनुसंधान के लिए किए जाने वाले प्रयासों का उल्लेख किया। डॉ. सिंह ने प्रौद्योगिकी विषय पर सीएसआईआर-सीएफटीआरआई में चलाए जा रहे एमएससी पाठ्यक्रम के माध्यम से खाद्य उद्योग में कुशल जनशक्ति की कमी को पूरा करने के लक्ष्य के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि आटा उद्योग के लिए कुशल जनशक्ति की आवश्यकता को सीएसआईआर-सीएफटीआरआई द्वारा

चलाए जा रहे सीएसआईआर-सीएफटीआरआई के इंटरनेशनल स्कूल ऑफ मिलिंग टेक्नोलॉजी पाठ्यक्रम द्वारा पूरा किया जा रहा है। सीएसआईआर-सीएफटीआरआई को भारत में खाद्य परीक्षण के लिए नोडल खाद्य प्रयोगशाला के रूप में अधिकृत किया गया है और यह भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण के साथ मिलकर खाद्य पदार्थों के परीक्षण के लिए अब तक लगभग 550 परीक्षण उपकरण विकसित कर चुका है।

इस अवसर पर सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके ग्रामीण भारत में आजीविका और व्यवसाय के अवसरों के सृजन के लिए सीएसआईआर-निस्पर के उन्नत भारत अभियान (यूबीए) और विभा के साथ चल रहे सहयोग की पृष्ठभूमि पर भी चर्चा की। उन्होंने संधारणीय विकास के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में ही अवसर पैदा करके ग्रामीण से शहरी

क्षेत्रों की ओर पलायन को रोकने और उन्नत भारत अभियान और विभा नेटवर्किंग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में हितधारकों की पहचान करने में की जाने वाली सहायता पर भी प्रकाश डाला, साथ ही उन्होंने इस संयुक्त पहल के अंतर्गत प्राप्त की गई उपलब्धियों को भी रेखांकित किया।

प्रो. वीरेंद्र कुमार विजय ने उन्नत भारत अभियान और सीएसआईआर के साथ इसके सहयोग का अवलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने ग्रामीण विकास की दिशा में यूबीए की पहल पर भी प्रकाश डाला।

उन्नत भारत अभियान के परियोजना निदेशक प्रो. पी.के. सिंह ने अपने संबोधन में यूबीए में कार्यरत विषय विशेषज्ञ समूहों और उनके योगदान के बारे में बताया। उन्होंने हितधारकों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को लागू करने के लिए यूबीए द्वारा दिए गए समर्थन पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर पर विभा वाणी के कार्यकारी निदेशक श्री एन.पी. राजीव ने इस दो दिवसीय कार्यक्रम को लोगों की तकनीकी आवश्यकताओं, जिन्हें सीएसआईआर के पास उपलब्ध तकनीकों के माध्यम से हल किया जा सकता है, की पहचान करने के लिए एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में रेखांकित किया। उन्होंने सीएसआईआर-सीएफटीआरआई तकनीकों के जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन को बढ़ावा देने में विभा वाणी के सहयोग के बारे में भी बात की।

सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. योगेश सुमन ने सीएसआईआर तकनीकों का उपयोग करके ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अवसर पैदा करने के लिए इन संगठनों द्वारा संयुक्त रूप से किए जा रहे प्रयासों के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। शेवरन लैबोरेटरीज प्राइवेट लिमिटेड, मैसूर के प्रबंध निदेशक सैम चेरियन ने देश में खाद्य उद्योग, खाद्य सुरक्षा और खाद्य स्थिरता के लिए सीएसआईआर-सीएफटीआरआई के प्रयासों और योगदान पर प्रकाश डाला।

तकनीकी सत्र में डॉ. आशुतोष इनामदार ने सीएसआईआर-सीएफटीआरआई में की जा रही विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों और नवाचार, उद्यमिता, स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र विकास और सहयोग एवं साझेदारी को बढ़ावा देने के माध्यम से हितधारकों के लाभ के लिए उनके कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के दूसरे दिन की शुरुआत श्री आशीष इनामदार द्वारा संचालित नेटवर्किंग सत्र से हुई, जहां प्रतिभागियों ने सीएसआईआर-सीएफटीआरआई प्रौद्योगिकी के उपयोग संबंधी विशिष्ट अवसरों की पहचान करने के लिए प्रौद्योगिकी विकास वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। सीएसआईआर-सीएफटीआरआई की ओर से डॉ. उमेश हेब्बर एच, डॉ. प्रदीप सिंह नेगी, डॉ. मीरा एमएस,



डॉ. अत्तर सिंह चौहान, डॉ. पीवी सुरेश, डॉ. पुष्पा एस मूर्ति और डॉ. आशुतोष इनामदार पैनल में शामिल हुए। उन्होंने फलों और सब्जियों, अनाज, पारंपरिक भोजन, मांस



प्रसंस्करण, काली मिर्च, हल्दी, अदरक मसालों आदि का प्रयोग करके मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने के क्षेत्रों में सीएसआईआर-सीएफटीआरआई द्वारा विकसित की गई विभिन्न तकनीकों के बारे में चर्चा की। सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. योगेश सुमन ने ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से आजीविका सृजन की दिशा में सीएसआईआर के प्रयासों पर प्रकाश डाला।

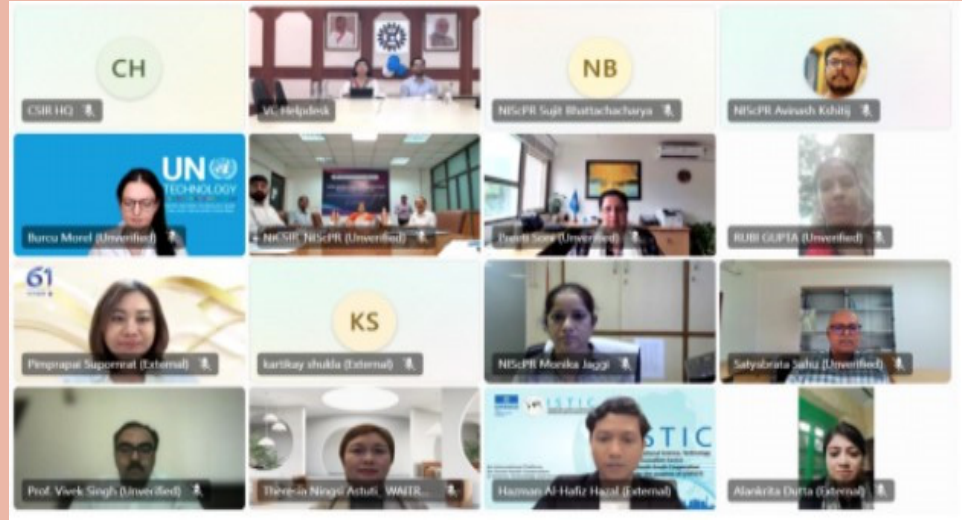
इस दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान डॉ. राघवेंद्र सी.के. द्वारा संचालित एक संवादात्मक सत्र का भी आयोजन किया गया, जिसमें कृषि के क्षेत्र में विभिन्न सरकारी योजनाओं को लागू करने के लिए जिम्मेदार बैंकिंग क्षेत्र की सरकारी एजेंसियों के प्रतिनिधियों ने बढ़-चढ़ हिस्सा

लिया। उन्होंने कृषि के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी को अपनाने और उद्यम तथा स्टार्ट-अप स्थापित करने के लिए उपलब्ध वित्तपोषण योजनाओं के बारे में चर्चा की। इस चर्चा में केएपीपीईसी कर्नाटक से श्री चंद्र कुमार, मडिकेरी से श्री चंद्रशेखर, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से श्री सैय्यद रिजवी और भारतीय स्टेट बैंक, मैसूर से श्री कृष्णमूर्ति शामिल हुए। उन्होंने प्रधानमंत्री फॉर्मलाइजेशन ऑफ माइक्रो फूड प्रोसेसिंग इंटरप्राइजेज (पीएफएमई), कृषि अवसंरचना कोष (एआईएफ), और खुदरा परिसंपत्ति ऋण केंद्र (आरएसीसी) जैसी वित्तपोषण योजनाओं और इकाईयों की स्थापना के लिए अन्य अल्पकालिक और दीर्घकालिक वित्तपोषण योजनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की।

सीएसआईआर ने दक्षिण-दक्षिण सहयोग को सशक्त बनाने हेतु नीतिगत विचार-विमर्श पर आयोजित संयुक्त सम्मेलन में प्रतिभागिता की

सीएसआईआर ने दक्षिण-दक्षिण सहयोग को मजबूत करने के लिए नीतिगत विचार-विमर्श पर एपीसीटीटी-यूएन ईएससीएपी (एशियाई और प्रशांत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण केंद्र) और डब्ल्यूआईटीआरओ (विश्व औद्योगिक एवं तकनीकी अनुसंधान संघ) के साथ साझेदारी में 11 सितंबर को ऑनलाइन मोड में आयोजित एक सम्मेलन प्रतिभागिता की। इस कार्यक्रम को सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) द्वारा सीएसआईआर-अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मामलों के निदेशालय (सीएसआईआर-आईएसटीएडी) के साथ डिजाइन और समन्वित किया गया।

इस सम्मेलन में कई वैश्विक संस्थान और दक्षिण देशों के प्रतिष्ठित विद्वानों ने भाग लिया। दक्षिण देशों पर ध्यान केंद्रित करने वाली प्रमुख वैश्विक संस्थाओं यथा- एपीसीटीटी, डब्ल्यूआईटीआरओ, आईएसटीआईसी-यूनेस्को इंटरनेशनल साइंस- नैतिक और जिम्मेदार शासन के लिए रूपरेखा, पश्चिम एशिया उत्तरी अफ्रीका संस्थान जॉर्डन, कम विकसित देशों के लिए संयुक्त राष्ट्र प्रौद्योगिकी बैंक के प्रमुख/ वरिष्ठ विशेषज्ञों ने इस सम्मेलन में प्रस्तुति दी। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय अनुसंधान और नवाचार एजेंसी इंडोनेशिया, सीएसआईआर-निस्पर, सीएसआईआर-आईएसटीएडी, सीएसआईआर-आईएमडी (नवाचार प्रबंधन निदेशालय), विट्स बिजनेस स्कूल दक्षिण



अफ्रीका, राष्ट्रीय अनुसंधान और नवाचार एजेंसी इंडोनेशिया, कंप्यूटर विज्ञान विभाग-दिल्ली विश्वविद्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-दिल्ली, नेब्रास्का विश्वविद्यालय-लिनकन यूएसए, औद्योगिक विकास में अध्ययन जुड़े संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, त्शवाना यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी दक्षिण अफ्रीका इत्यादि शोध संस्थानों के विशेषज्ञों ने भी इस सम्मेलन में प्रतिभागिता की। इस सम्मेलन में मुख्य रूप से इस बात पर विचार-विमर्श किया गया कि किस तरह दक्षिण के देश सहकारी भागीदारी के माध्यम से संधारणीय विकास लक्ष्यों, खासकर लक्ष्य 5 (लैंगिक समानता और सभी महिलाओं सशक्त बनाना) और 17 (संधारणीय विकास लक्ष्यों के लिए भागीदारी) को प्राप्त करने के लिए विज्ञान और नवाचार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, साथ ही दक्षिण देशों के बीच

संभावित भागीदारी और बनाई जा सकने वाली संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि चुनौतियों का अधिक प्रभावी ढंग से समाधान कैसे किया जा सकता है और कैसे दक्षिण-दक्षिण संपर्क के द्वारा व्यक्तिगत रूप से राष्ट्रों के मौजूदा प्रयासों का लाभ उठा जा सकता है। उद्घाटन सत्र के बाद सम्मेलन में तीन तकनीकी सत्र आयोजित किए गए हुए।

सत्र 1 का विषय था 'अनुसंधान और नवाचार के लिए जिम्मेदार शासन', सत्र 2 में 'विज्ञान में विविधता, समानता और समावेश' पर चर्चा हुई और सत्र 3 में 'अनुसंधान और विकास सहयोग के लिए वित्त पोषण तंत्र और क्षमता निर्माण' पर चर्चा हुई।

उद्घाटन सत्र में, सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल ने सम्मेलन और इसके महत्व पर विस्तारपूर्वक

प्रकाश डाला। उन्होंने नए मॉडल और तंत्रों की खोज करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया, जो विज्ञान, संसाधनों तक पहुंच, लैंगिक समानता, विविधता और समावेशन में जिम्मेदार अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा दे सकते हैं। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि इस सम्मेलन के परिणाम 19 सितंबर को विज्ञान शिखर सम्मेलन में 79वें संयुक्त राष्ट्र महासभा सीएसआईआर विज्ञान सत्र में 'एसडीजी हासिल करने के लिए दक्षिण-दक्षिण सहयोग को मजबूत करना' विषय के लिए प्रस्तुत किए जाएंगे।

इस कार्यक्रम में डॉ. रमा बंसल, प्रमुख, सीएसआईआर-आईएसटीएडी ने भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता को मजबूत करने में सीएसआईआर की भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. प्रीति सोनी, प्रमुख, एपीसीटीटी-यूएन ईएससीएपी, और सुश्री थेरिसिया निंगसी अस्तुति, इंडोनेशिया में डब्ल्यूएआईटीआरओ और राष्ट्रीय अनुसंधान और नवाचार एजेंसी (बीआरआईएन) की क्षेत्रीय प्रतिनिधि ने दक्षिण देशों की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी क्षमता को बढ़ाने और सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उनका समर्थन करने में उनके संगठनों द्वारा निभाई गई भूमिका को रेखांकित किया।

सत्र 1 की अध्यक्षता दक्षिण अफ्रीका के त्शवाने प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में नवाचार अध्ययन में डीएसटी-एनआरएफ एसएआरसीएचआई चेर रेटेड रिसर्च प्रोफेसर प्रोफेसर मैमो मुची ने की। इस सत्र में अनुसंधान और नवाचार के संदर्भ में जिम्मेदार प्रशासन पर ध्यान केंद्रित किया गया। सत्र में उत्तर और दक्षिण देशों के बीच की खाई को पाटने वाले खुले विज्ञान ढांचे की आवश्यकता पर बल दिया गया।

इस सत्र का संचालन आईएसटीएडी-सीएसआईआर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. यतेंद्र

कुमार सतीजा ने किया। इस सत्र में पैनलिस्ट के अंतर्गत डरबन यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, दक्षिण अफ्रीका के प्रो. रविंदर रेना; विट्स बिजनेस स्कूल, दक्षिण अफ्रीका के डॉ. दीरान सौमोनी; नेब्रास्का-लिंगन विश्वविद्यालय, यूएसए के प्रो. जॉन कालू ओसिरी; दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. विवेक सिंह; और आईएसटीआईसी-यूनेस्को के प्रो. सीएचएम. डॉ. मोहम्मद बयारुद्दीन अब्दुल रहमान शामिल थे। इस सत्र में निम्नलिखित मुख्य रूप से एक खुले विज्ञान ढांचे के लिए सक्षम नीतियां बनाना, वैज्ञानिक ज्ञान और संसाधनों में उत्तर-दक्षिण विभाजन को पाटना, जिम्मेदार शासन प्रथाएं, समावेशन, संसाधन साझाकरण और संधारणीयता तथा दक्षिण देशों में नैतिक रूप से स्वीकार्य और सामाजिक रूप से वांछनीय अनुसंधान के लिए रूपरेखा विकसित करने के संबंध में चर्चा की गई।

इस सम्मेलन के सत्र 2 की अध्यक्षता भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बेंगलूर के उच्च ऊर्जा भौतिकी केंद्र की प्रो. रोहिणी गोडबोले ने की। सत्र का संचालन सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नरेश कुमार ने किया। सत्र पैनलिस्ट में आईआईटी दिल्ली के ग्रामीण विकास और प्रौद्योगिकी केंद्र के प्रो. विवेक कुमार; जॉर्डन के अम्मान में पश्चिम एशिया-उत्तरी अफ्रीका (डब्ल्यूएनए) संस्थान में डब्ल्यूएनए कार्यालय की प्रमुख और वरिष्ठ शोधकर्ता डॉ. यारा शबान; और सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल शामिल थीं। पैनलिस्टों ने विज्ञान में विविधता, समानता और समावेश को बढ़ावा देने वाली नीतियों को विकसित करने की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित किया, जिसमें एसटीईएम में महिलाओं को सशक्त बनाने और ग्रामीण विकास को संबोधित करने पर जोर दिया गया। इस दिशा में भारतीय नीति और कार्यान्वयन के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरणों

पर प्रकाश डाला गया। सत्र 3 की अध्यक्षता औद्योगिक विकास अध्ययन संस्थान (आईएसआईडी) के निदेशक और मुख्य कार्यकारी प्रोफेसर नागेश कुमार ने की।

सीएसआईआर के नवाचार प्रबंधन निदेशालय (आईएमडी) के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. महेश कुमार ने सत्र का संचालन किया। पैनलिस्ट में त्शवाने प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मम्मो मुची, एपीसीटीटी की डॉ. प्रीति सोनी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के पूर्व सलाहकार और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रमुख डॉ. एस. के. वाष्णीय तथा सीएसआईआर-आईएसटीएडी की डॉ. रमा बंसल शामिल थे। इस सत्र में अनुसंधान एवं विकास सहयोग के लिए वित्तपोषण तंत्र और क्षमता निर्माण पर चर्चा की गई, जिसमें एसडीजी के साथ संरेखित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पहलों का समर्थन करने वाले विभिन्न वित्तपोषण साधनों और योजनाओं की खोज की गई। एपीसीटीटी, सीएसआईआर और डीएसटी द्वारा दक्षिण देशों में सफल हस्तक्षेप और क्षमता निर्माण के उदाहरणों पर प्रकाश डाला गया।

इस सम्मेलन का समापन सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सुजीत भट्टाचार्य द्वारा चर्चा किए गए प्रमुख मुद्दों और चुनौतियों का सामना करने में दक्षिण देशों द्वारा दिखाए गए आशाजनक मार्गों के विस्तृत विश्लेषणात्मक सारांश के साथ हुआ। सम्मेलन में दक्षिण देशों के लिए ऐसे तंत्र बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया जो सीखने और साझा करने को बढ़ावा दे सके जो विकास संबंधी चुनौतियों का सामना करने और सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दक्षिण देशों में विज्ञान-प्रौद्योगिकी-नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का एक महत्वपूर्ण सामूहिक प्रयास है।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में हिंदी दिवस के सुअवसर पर व्याख्यान का आयोजन

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने हिन्दी पखवाड़ा के दौरान हिंदी में विज्ञान लेखन की बातें: कुछ जानी कुछ अनजानी' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया। यह व्याख्यान डॉ. मनीष मोहन गोरे, वैज्ञानिक एवं संपादक, विज्ञान प्रगति, सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत किया गया। डॉ. गोरे ने अपनी प्रस्तुति में विज्ञान लेखन से जुड़ी बारीकियों, विज्ञान संचार के उद्देश्यों और इसके सामाजिक लाभों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने वैज्ञानिकों से अपील किया कि वे अनुसंधान के साथ-साथ अपने प्रयोग और शोध के बारे में जन

सामान्य से भी संवाद स्थापित करें। ऐसे प्रयासों से आम जन में विज्ञान को लेकर एक समझ विकसित होगी तथा उनका नजरिया तार्किक एवं प्रगतिशील होगा।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव ने अपने संबोधन में कहा कि आज

का विषय बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। आज अत्यंत आवश्यक है कि विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान, उपलब्धियां जन-जन तक पहुंचें, क्योंकि यदि ये उपलब्धियां आम लोगों तक नहीं पहुंचेंगी, तो ऐसे अनुसंधान की क्या सार्थकता? राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है



जिसके माध्यम से वैज्ञानिक उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य सफलतापूर्वक

उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने की दिशा में संस्थान द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित संस्थान की शोध उपलब्धियों की सफलता की कहानियों का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए अंतिम संपादन करके इसे प्रकाशित किया जाए। उन्होंने हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अपनी शुभकामनाएं दीं तथा सभी कर्मियों से आह्वान किया कि इनसे प्रेरणा लेते हुए आने वाले समय में इन आयोजनों में अपनी सक्रिय प्रतिभागिता सुनिश्चित करें।



किया जा सकता है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे अपने शोध को जन साधारण तक पहुंचाने की दिशा में निरंतर प्रयास करें। उन्होंने कहा कि शोध विषयों को हिंदी में संकलित करने के पश्चात संस्थान का एक वार्षिक प्रकाशन तैयार किया जाना चाहिए। साथ ही शोध एवं विकास संबंधी

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। मंच का संचालन संस्थान के हिंदी अधिकारी श्री संजय कुमार ने किया तथा प्रशासनिक अधिकारी श्री वीरेन्द्र लाम्बा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सीएसआईआर-सीरी में राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन



सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीरी) में राष्ट्रीय खेल दिवस 2024 को बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

संस्थान में विभिन्न खेलों-यथा फुटबॉल, क्रिकेट (टेनिस बॉल), शॉटपुट, डिस्कस थ्रो, बास्केटबॉल (शूट), टग ऑफ वॉर के लिए चैंपियंस चुनने के लिए दो दिवसीय एक खेल कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-सीरी के निदेशक डॉ. पी. सी. पंचारिया ने 29 अगस्त,

2024 को विजेताओं को प्रतिष्ठित मेजर ध्यानचंद राष्ट्रीय खेल दिवस ट्रॉफी से सम्मानित किया।

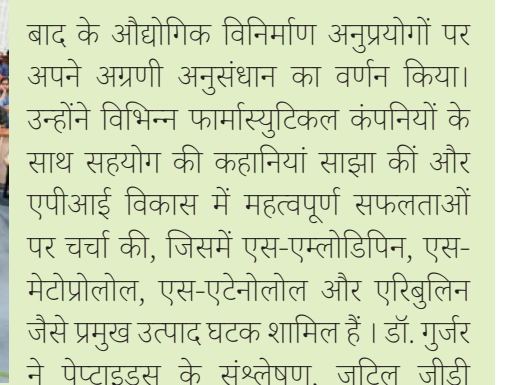
महिला वर्ग में टीम पीटी उषा चैंपियन बनी और पुरुष वर्ग में टीम धनराज पिल्ले अधिकतम अंक प्राप्त करके चैंपियन बनें। डॉ. पंचारिया ने विजेताओं को बधाई दी और अनुशासन और टीम भावना के साथ खेलने के लिए प्रतिभागियों की सराहना की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अनुशासन, कड़ी मेहनत और टीम भावना ही सफलता का मंत्र है, चाहे वह खेल हो या अनुसंधान और विकास।

उन्होंने कार्यक्रम के शानदार और कुशल आयोजन के लिए सीएसआईआर-सीरी स्टाफ क्लब के प्रयासों की भी सराहना की। प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने भी विजेताओं को बधाई दी।

डॉ. स्टाफ क्लब के सचिव श्री नीरज ने कार्यक्रम के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों का संपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया।

समापन समारोह के दौरान आयोजित गतिविधियों पर आधारित एक लघु वीडियो फिल्म भी दिखाई गई।

सीएसआईआर-एनसीएल में प्रो. के. वेंकटरमन स्मृति व्याख्यान का आयोजन



सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे द्वारा प्रो. के. वेंकटरमन स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह आयोजन सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनसीएल), पुणे में 19 सितंबर, 2024 को प्रतिष्ठित प्रो. के. वेंकटरमन की स्मृति में आयोजित किया गया। इस अवसर पर एमक्योर फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड के निदेशक मंडल के सदस्य एवं मुख्य वैज्ञानिक डॉ. मुकुंद के. गुर्जर ने "मेरी विज्ञान यात्रा और अब मैं कहां हूँ" विषय पर एक प्रेरक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। डॉ. गुर्जर ने अपने 50 साल के वैज्ञानिक करियर पर विचार करते हुए, नागपुर विश्वविद्यालय और लंदन विश्वविद्यालय में अपने शोध के

अनुभवों से, विज्ञान के प्रति अपने आकर्षण की शुरुआत दौर के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने अपने पीएचडी कार्य पर प्रकाश डाला, विशेष रूप से स्टोबे प्रतिक्रिया पर अपने यांत्रिकी अध्ययन को रेखांकित किया। व्याख्यान में उनके योगदान की एक विस्तृत श्रृंखला को भी शामिल किया गया, जिसमें ओलिगोसेकेराइड संश्लेषण, एन-ग्लाइकन जैवसंश्लेषण मार्ग, और माइक्रोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस की कोशिका भित्ति के अरबिनोग्लाइकटेन पेप्टिडोग्लाइकेन्स का संश्लेषण शामिल है। डॉ. गुर्जर ने फार्मास्युटिकल उद्योग में अनुप्रयुक्त विज्ञान के प्रभाव पर जोर दिया, एजेडटी (AZT) और

बाद के औद्योगिक विनिर्माण अनुप्रयोगों पर अपने अग्रणी अनुसंधान का वर्णन किया। उन्होंने विभिन्न फार्मास्युटिकल कंपनियों के साथ सहयोग की कहानियां साझा कीं और एपीआई विकास में महत्वपूर्ण सफलताओं पर चर्चा की, जिसमें एस-एम्लोडिपिन, एस-मेटोप्रोलोल, एस-एटेनोलोल और एरिबुलिन जैसे प्रमुख उत्पाद घटक शामिल हैं। डॉ. गुर्जर ने पेप्टाइड्स के संश्लेषण, जटिल जीडी-चेलेटिंग एजेंटों और जैविक गतिविधि में चिरेलिटी के महत्व और फार्मा उद्योग में चिरल स्विचिंग दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हुए शिक्षा और उद्योग के अंतर्वस्तु पर चर्चा की। इस अवसर पर सीएसआईआर-एनसीएल के निदेशक डॉ. आशीष लेले ने ऑर्गेनिक केमिस्ट्री में डॉ. गुर्जर के विशाल योगदान की प्रशंसा की और भविष्य के बारे में आशा व्यक्त करते हुए कहा कि सीएसआईआर-एनसीएल डॉ. गुर्जर जैसे दिग्गजों के मार्गदर्शन में नए आयामों की खोज जारी रखेगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. स्वाति चड्ढा ने किया। और डॉ. मोनीशा फर्नांडीस ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

सीएसआईआर-एनएमएल के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अभिलाष प्रतिष्ठित विज्ञान युवा-शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित

सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म अपशिष्ट पुनर्चक्रण उद्योगों पर भी गहरा प्रभाव डाला है।

प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनएमएल) के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अभिलाष को अभियांत्रिकी विज्ञान में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिष्ठित विज्ञान युवा-शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के क्षेत्र में उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों को उजागर करता है, जो विशेष रूप से अभिनव और संधारणीय प्रक्रियाओं के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के कर-कमलों द्वारा यह पुरस्कार डॉ. अभिलाष को प्रदान किया गया। डॉ. अभिलाष ने खदान और प्रक्रिया अपशिष्ट जैसे द्वितीयक संसाधनों से महत्वपूर्ण और रणनीतिक धातुओं के निष्कर्षण के लिए अंतःविषय स्वदेशी प्रक्रियाओं के विकास में महत्वपूर्ण प्रगति की है। उनके काम ने न केवल वैज्ञानिक ज्ञान को उन्नत किया है, बल्कि खनन, धातुकर्म और



महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में अग्रणी के रूप में स्थापित किया है। यह पुरस्कार डॉ. अभिलाष के अनुसंधान के प्रति समर्पण और अभियांत्रिकी विज्ञान में उनके महत्वपूर्ण योगदान का प्रमाण है, जिसमें भारत और अन्य स्थानों पर सतत विकास और तकनीकी उन्नति को बढ़ावा देने की क्षमता है।

डॉ. अभिलाष की उल्लेखनीय उपलब्धियों में निम्न-श्रेणी के अवशेषों से यूरेनियम के जैव-प्रसंस्करण, दूषित स्थलों का उपचार, तथा लाल मिट्टी, ब्लास्ट फर्नेस स्लैग, विभिन्न उत्प्रेरकों और ईवी बैटरियों से सीधे दुर्लभ-पृथ्वी तत्वों के निष्कर्षण के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का विकास और सफल व्यावसायीकरण शामिल है। इन नवाचारों ने डॉ. अभिलाष को संसाधन पुनर्प्राप्ति और पर्यावरणीय स्थिरता में

महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में अग्रणी के रूप में स्थापित किया है। यह पुरस्कार डॉ. अभिलाष के अनुसंधान के प्रति समर्पण और अभियांत्रिकी विज्ञान में उनके महत्वपूर्ण योगदान का प्रमाण है, जिसमें भारत और अन्य स्थानों पर सतत विकास और तकनीकी उन्नति को बढ़ावा देने की क्षमता है।

महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में अग्रणी के रूप में स्थापित किया है। यह पुरस्कार डॉ. अभिलाष के अनुसंधान के प्रति समर्पण और अभियांत्रिकी विज्ञान में उनके महत्वपूर्ण योगदान का प्रमाण है, जिसमें भारत और अन्य स्थानों पर सतत विकास और तकनीकी उन्नति को बढ़ावा देने की क्षमता है।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों / जनसम्पर्क अधिकारियों / हिन्दी अधिकारियों / अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों / पुरस्कार / सम्मानों / कार्यशालाओं / संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार / सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार